• वर्ष : 14 • अंक : 10 • दिसम्बर 2021 • मूल्य : ₹ 10 • पेज : 4 RNI No. MPHIN/2007/23351

अंतर्मुखी
मुनि श्री पूज्य सागर महाराज

श्रीफल

भव्य जैनेश्वरी दीक्षा महामहोत्सव
बांसवाड़ा, 10 दिसम्बर 2021

छह मुमुक्षुओं ने वरण किया वैराग्य का पथ

तपस्वी सम्राट आचार्य श्री सन्मति सागर महाराज के सुयोग्य शिष्य आचार्य श्री सुन्दर सागर महाराज 26 वर्ष से निर्ग्रन्थ अवस्था में विचरण कर साधु परमेष्ठी पद का निर्वाह करते हुए समाज की 36 चेतन आत्माओं को मंत्रोच्चारण के साथ अपने हस्तकमलों से संयम मार्ग लगा चुके हैं। इन्हीं आचार्य श्री की प्रेरणा से शुक्रवार, 10 दिसम्बर की पावन तिथि पर बांसवाड़ा नगर में छह और दीक्षाएं हुईं और रीता दीदी, पूजा दीदी, सुरभि दीदी, लक्ष्मी दीदी, रश्मि दीदी और विश्वलता दीदी संयम मार्ग पर चल पड़ीं। इन बहनों में एक इंजीनियर और एक पीएच.डी भी है। यह एक सुअवसर और भी था, क्योंकि यह छह दीक्षा आचार्य श्री आदिसागर महाराज की 109वीं जन्म जयंती के अवसर पर हुईं।

आज से हुआ है आपका संस्कार जन्म

• सम्पादकीय

अन्तर्मुखी मुनि पूज्य सागर महाराज

आर्यिका ... आशीर्वाद

आज आप का संस्कार जन्म हुआ है। आज से अपकी नई पहचान होगी। आज से आपका का ना कोई स्थाई पता होगा और ना ही आप यह कह पाओगी कि मेरे पिता-माता या परिवार का सदस्य आया है बल्कि अब आपके लिए अब सब श्रावक होंगे। अब आप की क्रियाएं दूसरों के लिए नहीं स्वयं के लिए होंगी। आप स्वयं याद करना कि कई बार आचार्य श्री ने आप को कुछ कहा होगा और आप कुछ कारण से नहीं कर पाईं होंगी या किया भी होगा तो आचार्य श्री के अनुकूल नहीं हुआ होगा। जब आपके साथ भी कुछ ऐसी घटना घटे तो पूरे प्रकरण को याद कर लेना आपका मन शांत और आनंदित रहेगा।

आज से आप सब का उठना, बैठना, बोलना, सोना, खाना-पीना, देखना, सुनना इन सबके साथ विचार, सोच सब कुछ नया होगा। अब पूरे समाज की नजर आप पर होगी और आप की दिनचर्या पर होगी। आज से आप के जीवन का एक नया अध्याय लिखा जाएगा। आप आज से पुराने परिचित व्यक्तियों से भी अनजान बनकर रहना। उन्हीं से सम्पर्क बढ़ाना जो मोक्ष मार्ग के लिए निकल रहे हों या जिन्होंने अपना जीवन साधु सेवा के लिए समर्पित कर रखा है।

कई श्रावक आप से जुड़ना चाहेंगे। उन सब के जुड़ने के कारण अलग-अलग होंगे पर आप उन सब को धर्म के मार्ग पर चलने का उपदेश देना। आप उनमें से उन्हीं से संपर्क बनाना जो आपके दर्शन, ज्ञान और आचरण से प्रभावित होकर जुड़ा हो। वह श्रावक कभी ना कभी सयंम मार्ग पर आरूढ़ होगा और नहीं भी हुआ तो जीवन भर आपके सयंम पालन करने में सहयोग करेगा।

(शेष पृष्ठ 4 पर)

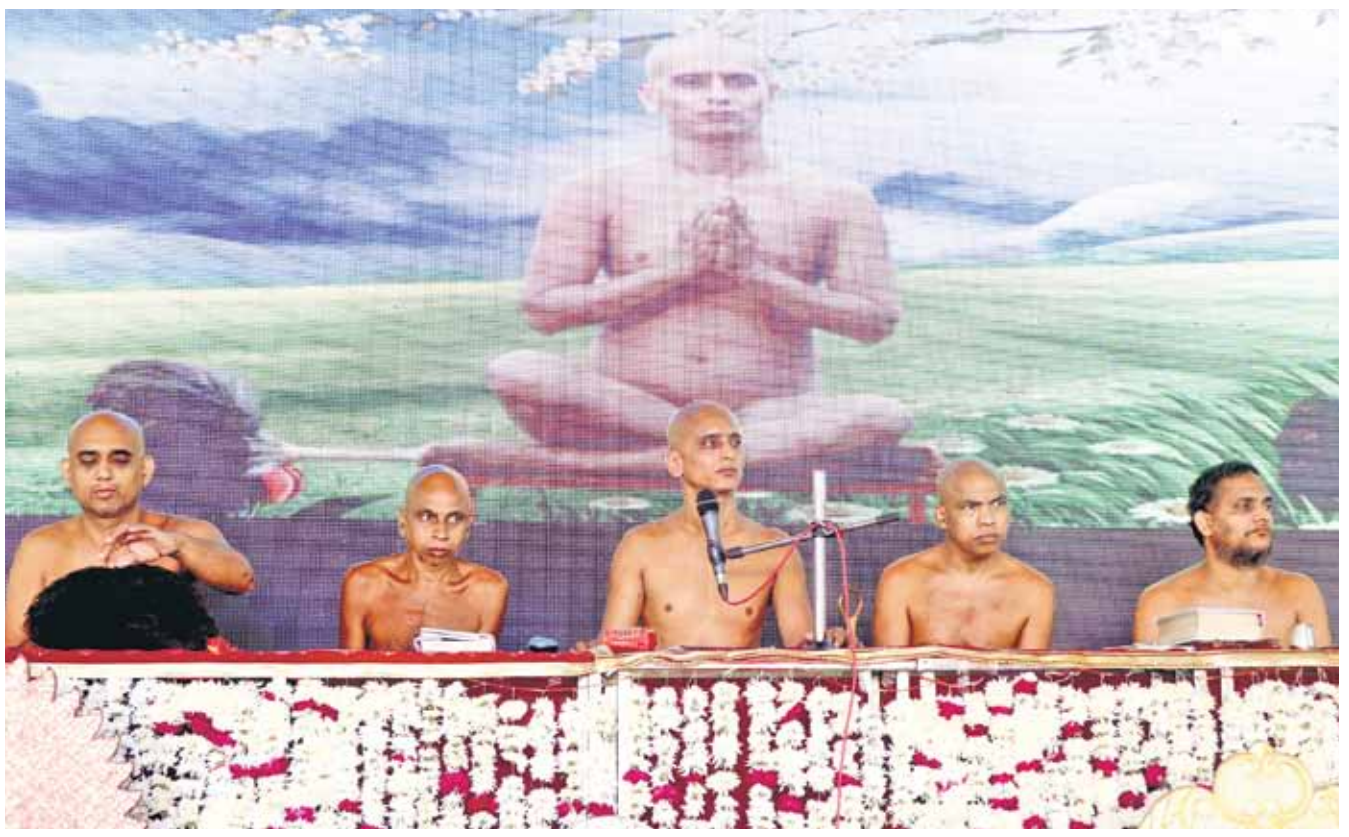

पांच आचार्यों के सान्निध्य में बांसवाड़ा में शुक्रवार को तीन आर्यिका और क्षुल्लिका दीक्षा सम्पन्न हुई। इस मौके पर दीक्षा प्रदाता आचार्य श्री सुन्दर सागर महाराज, आचार्य श्री समता सागर महाराज, आचार्य श्री विभव सागर महाराज, आचार्य श्री सुवीर सागर महाराज, आचार्य श्री अनुभव सागर महाराज दीक्षा संस्कार संपन्न कराते हुए।

दीदीयां अब इन नामों से जानी जाएंगी

• रीता दीदी अब आर्यिका श्री सुकाव्यमति
• पूजा दीदी अब आर्यिका श्री सुलक्ष्यमति
• सुरभि दीदी अब आर्यिका श्री सुरम्यमति जी
• लक्ष्मी दीदी अब क्षुल्लिका श्री सुतथ्यमति
• रश्मि दीदी अब क्षुल्लिका श्री सुनम्यमति
• विश्वलता दीदी अब क्षुल्लिका श्री सुपथ्यमति

पिच्छिका भेंट

• श्री सुरेश, डॉ. शैलेन्द्र, श्री मनोज जी, एटा
• श्री दिलीप चेतना जी, बंडी, रतलाम
• सरोज, श्री उमेश जी, रतलाम
• श्री अनूप जी बोरखा वाले
• श्री रवीन्द्र जी, पंकज जी, एटा

शास्त्र भेंट

• सरला श्री प्रदीप जी, कानपुर
• श्री दिलीप चेतना बंडी, रतलाम
• श्री उमेश सरोज, रतलाम
• आशा श्रीपाल जी, लोहारिया
• श्री संजीव कुमार, सुभाष कुमार जी, एटा
• संध्या श्री रवि कुमार जी, एटा

कमण्डल

• श्री दिलीप चेतना जी, रतलाम
• सरोज, श्री उमेश जी, रतलाम
• श्री दीपचन्द जी, इटावा
• श्री महावीर कुमार जी, बाराबंकी
• श्री प्रदीप जी, कानपुर

माला भेंट

• श्री प्रदीप जी, कानपुर
• श्री अजय कमार, बड़ौत
• सरोज श्री रमेश जी, रतलाम
• रेणु जी, बाराबांकी
• श्री कांतिलाल जी, बडोडिया
• श्री अजबलाल जी

आर्यिका दीक्षा के बाद रीता दीदी, पूजा दीदी, सुरभि दीदी इन 28 मूल गुणों का करेंगी पालन

• अन्तर्मुखी मुनि पूज्य सागर महाराज

बांसवाड़ा। बांसवाड़ा नगर का आज का दिन इतिहास के पन्नों पर लिखा जाएगा, क्योंकि दीक्षा मंच पर आचार्य परंपरा के पांच आचार्य और मुनि विराजमान थे। दीक्षा प्रदाता आचार्य श्री सुंदर सागर जी महाराज स्वयं आचार्य श्री आदिसागर जी महाराज की परंपरा के आचार्य है। इन्हीं की परम्परा के आचार्य श्री विभव सागर जी महाराज और आचार्य श्री सुवीर सागर महाराज भी इस मंच पर विराजमान थे।

इनके साथ ही आचार्य श्री शांति सागर महाराज (दक्षिण वाले) की आचार्य परम्परा में से आचार्य श्री अनुभव सागर जी महाराज और आचार्य श्री शांति सागर महाराज (छाणी वाले) की आचार्य परम्परा से मुनि श्री वैराग्य सागर जी विराजमान रहे। इस दीक्षा के साक्षी 5 आचार्य, एक उपाध्यय सहित 70 पिच्छीधारी संयमी और भट्टारक स्वस्तिश्री धर्मकीर्ति स्वामी जी अरतीपुर (कर्नाटक) के साथ बांसवाडा नगर और पूरे देश के कोने कोने से आए श्रावक बने।

दीक्षा प्रदाता आचार्य श्री सुन्दर सागर जी महाराज, आचार्य श्री समता सागर जी महाराज, आचार्य श्री विभव सागर जी महाराज, आचार्य श्री सुवीर सागर जी महाराज, आचार्य श्री अनुभव सागर जी महाराज सहित 70 पिच्छीधारी जब दीक्षार्थी बहन रीता दीदी, पूजा दीदी, सुरभि दीदी, लक्ष्मी दीदी, रश्मि दीदी के साथ दीक्षा स्थल पर शुभ मुहूर्त 9.30 बजे पहुचे तो पांडाल जयकारों गूंज उठा। उपस्थित श्रावक-श्राविकाएं अलग-अलग जयकारे लगाकर यह बतलाना चाहते थे कि हम उपस्थित है और दीक्षा महोत्सव की अनुमोदना कर रहे है।

कार्यक्रम का शुभारम्भ कलश स्थापना, दीप प्रज्जवलन, मंगलाचरण, नृत्य, भजन से हुआ। मंच पर दीक्षार्थी बहनों ने गुरुपरम्पर के आचार्यों को ,दीक्षा प्रदाता आचार्य श्री सुन्दर सागर जी महाराज एवं आचार्य श्री समता सागर जी महाराज, आचार्य श्री विभव सागर जी महाराज, आचार्य श्री सुवीर सागर जी महाराज और आचार्य श्री अनुभव सागर जी महाराज को अर्घ्य समर्पित किए। दीक्षा के लिए तैयार दीक्षा पीठ पर स्त्रियों द्वारा भजन बोलते हुए दीक्षार्थियों का चौक पूरण किया गया जिसमे दीक्षार्थी गुरु आज्ञा लेकर दीक्षा के लिए विधि पूर्वक चौक पर बैठीं।

दीक्षा की ओर बढ़ते चरण

• **पहला चरण :** दीक्षार्थी बहन रीता दीदी, पूजा दीदी, सुरभि दीदी, लक्ष्मी दीदी, रश्मि दीदी ने आचार्य श्री सुंदर सागर जी महाराज से दीक्षा ग्रहण कराने के लिए निवेदन किया।
• **दूसरा चरण :** दीक्षार्थी पांचों बहनों ने गुरुवर आचार्य श्री सुन्दर सागर महाराज से आज्ञा लेकर चौकी पर बिछे श्वेत वस्त्र पर दक्षिण पैर उठाकर रखा और उसके बाद दूसरा पैर रखकर बैठ गईं। इसके पश्चात आचार्य श्री सुन्दर सागर जी महाराज ने संघ एवं मंच पर उपस्थित संत समुदाय और श्रावकों से दीक्षा देने की स्वीकृति मांगी।
• **तीसरा चरण :** दीक्षार्थी बहनों ने केशलोंच क्रिया प्रारम्भ करने से पूर्व सिद्ध भक्ति और योगी भक्ति का वाचन किया।
• **चौथा चरण :** वृहत शांतिमंत्र उच्चारण से मस्तक पर तीन बार गंधोदक क्षेपण किया।
• **पांचवा चरण :** वर्धमान मंत्र के द्वारा केशर आदि मंगल द्रव्य से आशीर्वाद प्राप्त किया।
• **छठवां चरण :** विशिष्ट मंत्र तथा पंच परमेष्ठी के स्मरण से दीक्षा प्रदाता आचार्य श्री सुन्दर सागर महाराज द्वारा पंचमुष्ठी केशलोंच किया गया।
• **सातवां चरण :** केशलोंच के पूर्ण होने के बाद सिद्ध भक्ति पूर्व केशलोंच निष्ठापन किया गया।
• **आठवां चरण :** जल से सिर प्रक्षालन किया गया।
• **नवां चरण :** खड़े होकर रंगीन वस्त्र तथा आभूषण आदि का त्याग एवं जीवन भर के लिए श्वेत साड़ी पहनने का संकल्प लिया। (यह वह चरण है कि जब दीक्षार्थी चाहे तो वापस घर जा सकता है।)
• **दसवां चरण :** दीक्षार्थियों द्वारा पुनः हाथ जोड़कर दीक्षा संस्कार करने लिए निवेदन किया गया।
• **ग्याहरवां चरण :** दीक्षा प्रदाता आचार्य श्री सुन्दर सागर महाराज द्वारा सिर पर श्रीकार लेखन किया गया।
• **बरहवां चरण :** सिर पर 108 लोंग से सर्व शांतिमंत्र।
• **तेरहवां चरण :** दीक्षार्थी के हाथ की अंजलि में केशर कर्पूर से श्रीकार लेखन किय गया।
• **चौदहवां चरण :** हथेली की अंजलि के अंदर चारो दिशाओं में क्रमशः 3,24,5,2 अंक का लिखकर अक्षत, श्रीफल,सुपारी से अंजलि को भर दिया गया। उसके बाद लघु चारित्र, योग भक्ति पढ़कर मन्त्रों के द्वारा व्रतों का आरोपण किया गया।
• **पंद्रहवां चरण :** शांतिभक्ति पढ़कर हथेली की अंजलि में भरे द्रव्य को धर्म के माता-पिता को दिया गया।
• **सोलहवां चरण :** दीक्षार्थियों के सिर पर लोंग से मंत्रों द्वारा सोलह संस्कार विधि की गई।
• **सत्रहवां चरण :** गुरुर्वावलि पढ़कर दीक्षा प्रदाता आचार्य श्री सुंदर सागर जी महाराज द्वारा पांचों दीक्षार्थी बहनों का नामकरण संस्कार किया गया।
• **अठारहवां चरण :** आचार्य श्री सुंदर सागर जी महाराज द्वारा दीक्षार्थियों को पिच्छी प्रदान की गई।
• **उन्नीसवां चरण :** आचार्य श्री सुंदर सागर जी महाराज द्वारा दीक्षार्थियों को शास्त्र प्रदान किए गए।
• **बीसंवा चरण :** आचार्य श्री सुन्दर सागर जी महाराज द्वारा दीक्षार्थियों को कमण्डल प्रदान किए गए।
• **इक्कसीवां चरण :** आचार्य श्री सुन्दर सागर जी महाराज द्वारा दीक्षार्थियों को माला प्रदान की गई।
• **बाइसवां चरण :** सामाधि भक्ति पाठ किया गया।

दीक्षा संस्कार का जन्म

आचार्य सुन्दर सागर महाराज

वास्तव में देखे तो दीक्षा तो एक नया जीवन है। जिस प्रकार एक जन्म माता-पिता देते है ऐसे ही दूसरा जन्म गुरु देता है। गुरु संस्कार कर जन्म देता है। जैन शासन में भगवान महावीर की परंपरा की चली आ रही है। इसके तहत दीक्षा लेने वाले का वैराग्य होना चाहिए। जीवन कषायों को त्यागना होता है। जो भी जैनेश्वरी दीक्षा लेना चाहता है, उसे सबसे पहले उस परिवार को वह जिसके साथ रहता है, दिन में चार पांच बार भोजन करता है, उसे यह सब त्याग करना पड़ेगा। इसलिए दीक्षा से लेने पहले वह घर से दीक्षा की अनुमति लेता है। दीक्षार्थी सब त्याग कर अनुमति लेता है, फिर गुरु के पास जाता है। गुरु भी दीक्षा देने से पहले समाज से अनुमति लेते है। ताकि किसी भी प्रकार का दबाव न हो। दीक्षा लेने के बाद दीक्षार्थी को 24 घंटे में एक बार ही भोजन-पानी मिलेगा। दो माह, चार माह, पांच माह में एक बार स्वयं के हाथों से बाल तोड़कर निकालने होते है। यदि अपने मन में जीवन कषाय है तो वह दीक्षा नहीं ले सकता है। दीक्षार्थी कर्ज से डूबा हुआ या किसी अपराध से प्रोत नहीं होना चाहिए। दीक्षा संस्कार का जन्म है। व्यक्ति कर्म जन्म के बाद संस्कार के जन्म में गुरु के माध्यम से शुरू करता है। इसमें आत्म चिंतन करना होता है। इसमें आना अपनी मर्जी से होता है, लेकिन जाने का प्रश्न नहीं है। इसमे कर्म की निर्जना है। इसमें पुण्य नहीं कमाया जाता है। सिर्फ आत्म चिंतन करना होता है। दीक्षा में अहिंसा परमोधर्म की पालना करना होगा। दीक्षा लेने वाला व्यक्ति क्षमा तो मांगता ही है साथ ही उसे सभी को क्षमा करना भी होता है। दीक्षार्थी को मोक्ष मार्ग पर आगे बढ़ाने के लिए सबकी अनुमति जरूरी है। दीक्षा से पहले उसका समाज छोटा होता है लेकिन दीक्षा लेने के बाद पूरा विश्व उसका समाज होता है।

यूं सजी संस्कारों की रंगोली

दीक्षार्थी दीदियों का धर्म के माता-पिताओं ने हल्दी संस्कार किया...

मूलाचार ग्रंथ के 28 मूल गुणों का पालन

आर्यिका दीक्षा के संस्कार के बाद रीता दीदी, पूजा दीदी, सुरभि दीदी मूलाचार ग्रन्थ में बताए गए पांच महाव्रत, पांच समिति, पञ्चेन्द्रिय निरोध, छरू (षट्) आवश्यक, शेष सात गुण सहित इन 28 मूलगुणों का पालन करेंगी। इन नियमों का पालन मुनि दीक्षा और आर्यिका दीक्षा लेने वाले दोनों पालन करते हैं। आर्यिका माताजी बैठे-बैठे आहार ग्रहण करती हैं और एक साड़ी का उपयोग करती हैं। बाकी सभी उन्हीं नियमों का पालन करती हैं, जो एक मुनि को पालन करना होता है। हिंसादि पांचों पापों का मन, वचन, काय एवं कृत, कारित, अनुमोदना से त्याग करना महापुरुषों ने महाव्रत कहा है।

•दीक्षा से पहले

दीक्षा के पहले तक श्रावक धर्म का पालन किया जाता है। गृहस्थ धर्म में त्याग छोटे-छोटे नियमों से शुरू होता है। जैन धर्म में वह सब त्याग करने को कहा है, जो मनुष्य को कमजोर कर शरीर से ममत्व करने का कारण बनें और आत्म शक्ति को पहचानने में भूल करे। फिर चाहे वह भक्ष्य योग्य हो या अभक्ष्य हो। साथ ही जो पांचों इंद्रियों में आसक्त करें, वह सभी उपयोगी वस्तुएं एवं खाद्य वस्तुओं का त्याग और विजय प्राप्त करने वाले हर वस्तु को ग्रहण करने का संकल्प कर जीवन को जीता है। त्याग की शुरुआत कहीं से की जा सकती है। कितना, कब, किस रूप में और कितने समय के लिए करता है, वह मनुष्य की शक्ति पर निर्भर करता है, लेकिन त्याग की शुरुआत जिनेन्द्र भगवान पर आस्था, श्रद्धा, विश्वास से होती है। धीरे-धीरे त्याग का स्तर बढ़ जाता है।

त्याग के यह नियम आजीवन भी हो सकते हैं या कुछ समय के लिए भी। इनके पालन में दोष भी लग सकते हैं। यह सब गृहस्थ व्यक्ति, जीवन में धर्म के संस्कारों और अपनी आत्मशक्ति को बढ़ाने के लिए करता है। जब इन सब नियमों को पालन करने की पूर्ण शक्ति प्रकट हो जाती है, तब ही वह मुनि धर्म (आर्यिका आदि) बनने का संकल्प करते हुए दीक्षा धारण करता है और जीवन पर्यन्त के लिए उन सबका त्याग करता है, जिसमें हिंसा आदि होती हो और स्पर्श आदि इन्द्रिय पुष्ट होती हो। उन निमित्तों को भी त्याग करता है जो इन ओर ले जाए। इन्हीं व्रतों को 28 मूलगुण भी कहते हैं।

श्रावक के लिए ये होते हैं नियमः

- अष्टमूलगुण (मद्य, मांस, मधु, बड़, पीपल, पाकर, कठूमर, गूलर इन आठों का त्याग),
- रात्रि भोजन का त्याग
- पानी छानकर पीना
- देव दर्शन करना
- दिन में एक-दो-तीन-चार आदि बार भोजन करने का नियम लेना
- नमक-शक्कर-घी-दूध-दही-तेल, हरी सब्जी, हरे फल आदि का जीवनभर या कुछ समय का त्याग
- ऊनी वस्त्र, गद्दी पर सोने और रजाई ओढ़ने का त्याग
- चप्पल-जूते का कभी-कभी या जीवन भर के लिए त्याग
- हिंसा करने का त्याग
- झूठ बोलने का त्याग
- चोरी करने का त्याग
- वासना का त्याग
- परिग्रह का त्याग
- मौन रखना
- सामायिक करना
- प्रतिक्रमण करना
- अनाज का त्याग आदि

•दीक्षा के बाद

दीक्षा जैन धर्म की एक ऐसी पुनीत परम्परा है, जिसमें व्यक्ति गृहस्थ जीवन और सांसारिक मोह-माह सहित सभी तरह के विषय कसायों से दूर होकर आत्म कल्याण के पथ पर अग्रसर होता है। बांसवाड़ा में वात्सल्य सम्राट एवं दिव्य तपस्वी आचार्य 108 श्री सुंदर सागर महाराज सहित करीब 65 संतों के पावन सान्निध्य में आयोजित भव्य जैनेश्वरी दीक्षा समारोह में पांच ब्रह्मचारिणी दीदी को दीक्षा दी जा रही है। दीक्षा के उपरांत सभी दीदी की नित्य जीवनचर्या में महत्वपूर्ण बदलाव होंगे। उन्हें संयम और तप के विभिन्न नियमों का पालना करना होगा।

आचार्यों और मुनियों का मिला मंगल सान्निध्य और आशीर्वाद

इस भव्य दीक्षा समारोह को आचार्यों, मुनियों और भट्टारकों का मंगल सान्निध्य भी प्राप्त हुआ और उनके मंगल आशीर्वाद से यह भव्य समारोह सम्पन्न हुआ तथा दीक्षार्थी बहनों ने संयम पथ पर चलने का संकल्प लिया।

समारोह को सान्निध्य प्रदान करने वाले प्रमुख संयमीजन

- **दीक्षा प्रदाता :** आचार्य श्री सुंदर सागर जी महाराज
- आचार्य श्री समता सागर जी महाराज ससंघ
- आचार्य श्री विभव सागर जी महाराज ससंघ
- आचार्य श्री सुवीर सागर जी महाराज ससंघ
- आचार्य श्री अनुभव सागर जी महाराज ससंघ
- उपाध्याय श्री ऊर्जयन्त सागर जी महाराज
- मुनि श्री आज्ञा सागर जी महाराज
- मुनि श्री विकसंत सागर जी महाराज
- अन्तर्मुखी मुनि श्री पूज्य सागर जी महाराज एवं 67 पिच्छीधारी
- **इनके अतिरिक्त :** भट्टारक चिंतामणि डॉ स्वस्तिश्री धवलकीर्ति स्वामी जी, अरिहंतगिरी जैन मठ (तमिलनाडु) भट्टारक स्वस्तिश्री सिद्धांतिकीर्ति स्वामी जी,अरतीपुर जैन मठ (कर्नाटक) का मंगल सान्निध्य भी प्राप्त हुआ।

दीक्षा प्रदाता आचार्य का जीवन परिचय

इस भव्य समारोह में जिन आचार्य श्री सुंदर सागर जी महाराज ने दीक्षा प्रदान की उनका स्वयं का जीवन बहुत प्रेरणास्पद रहा है। आइए जानते है उनके जीवन के बारे में ...

आचार्य श्री सुंदर सागर जी महाराज

- **पूर्व नाम** : श्री प्रदीप कुमार जैन
- **पिता** : श्रीमान राधेश्याम अग्रवाल
- **माता** : श्रीमती सावित्री देवी अग्रवाल
- **विशेषता** : वैष्णव धर्म से जैन धर्म परिवर्तन
- **जन्मस्थान** : पहाड़ी धीरज, सदर बाजार, दिल्ली।
- **जन्म तिथि** : 9 नवम्बर 1976
- **शिक्षा** : बी.कॉम, कम्प्यूटर
- **भ्राता** : अग्रज श्री प्रवीण कुमार, अनुज श्री नितिन कुमार
- **विवाह** : बाल ब्रह्मचारी
- **खेल** : क्रिकेट, फुटबॉल
- **रुचि** : गुरुभक्ति, स्वाध्याय, लेखन, चिंतन
- **सांस्कृतिक रुझान** : धार्मिक, सामाजिक नाट्य मंचन
- **वैराग्य का कारण** : मृत्यु बोध
- **संस्कारों के स्रोत** : साधु संगति, संस्कार जैन विद्यालय

वैराग्य पथ

- गांधीनगर दिल्ली में आचार्य सन्मति सागर के प्रथम दर्शन।
- आचार्य सन्मति सागर महाराज की दिल्ली में वैय्यावृति करते हुए आलू, प्याज, चमड़ा एवं रात्रिभोजन का त्याग किया ।
- आचार्य श्री महावीरकीर्ति महाराज की 24 वें समाधि दिवस पर आचार्य सन्मति सागर महाराज से 18 वर्ष की आयु में दिल्ली में आजीवन ब्रह्मचर्य का नियम लिया।
- आचार्य सन्मति सागर महाराज के हस्तकमलो से 16 जुलाई 1996 आषाढ़ सुदी एकम, वीर निर्वाण संवत् 2522 को शिकोहाबाद, उत्तर प्रदेश में मुनि दीक्षा सम्पन्न हुई।
- आचार्य श्री सन्मति सागर महाराज के अपने हस्तकमलो से 25 जनवरी 2007 को औरंगाबाद में आचार्य पद के संस्कार किए।

अब तक चातुर्मास

- 1996 से 2021 तक 26 चातुर्मास सम्पन्न किए जो निम्न स्थानों पर हुए
- फिरोजाबाद (उ.प्र.), टीकमगढ़ (म.प्र.), चम्पापुर (बिहार),

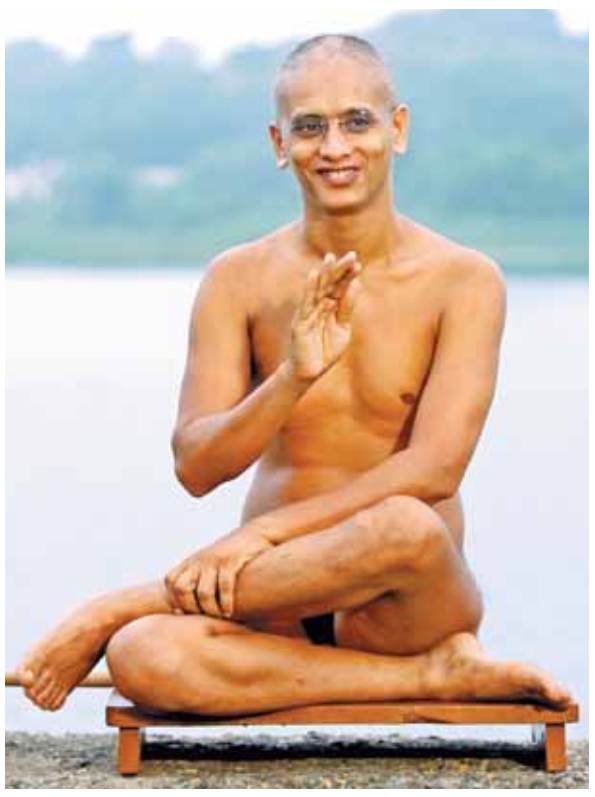

बनारस भेलूपुर (उ.प्र.), छतरपुर (म.प्र.), उज्जैन (म.प्र.), नरवाली (राज.), उदयपुर (राज.), खमेरा (राज.), बोरीवली मुम्बई (महा.), लासूरणे (महा.), लासूर (महा.), बोलठाण (महा.), फलटण (महा.), नातेपुते (महा.), रतलाम (म.प्र.), सम्मेदशिखर, सम्मेदशिखर, एटा (उ.प्र.), इटावा (उ.प्र.), बाराबंकी (उ.प्र.), बड़ौत (उ.प्र.), लोहारिया (राज.), सेक्टर 11 उदयपुर (राज.), हुमड़ भवन उदयपुर (राज.), मोहन कॉलोनी बांसवाड़ा (राज.)

- **अब तक प्रदान की गईं दीक्षा** : आचार्य श्री की प्रेरणा से अब तक 41 श्रावक संयम पंथ पर चलने का संकल्प ले चुके हैं।

पंचकल्याणक प्रतिष्ठाएं :

- आचार्य श्री के सान्निध्य में देश भर में विभिन्न स्थानों पर 11 पंचकल्याण प्रतिष्ठाएं हो चुकी हैं और इनके जरिए पूरे देश में धर्म प्रभावना हुई है:
- लासूर स्टेशन (महा.)2007, अतिशय क्षेत्र कोकमठाण 2008, साकोरा नांदगांव 2008, बोलठाण (महा.) 2009, लासूरणे (महा.) 2011, एटा (उ.प्र.) 2014, भिण्ड (म.प्र.) 2015, जसवंतनगर (उ.प्र.) 2015, एटा (उ.प्र.) 2016, शास्त्री नगर मेरठ (उ.प्र.) 2017, रतलाम (म.प्र.) 2018

साहित्य सृजन

आचार्य श्री ने कई पुस्तकें लिखी हैं जो समाज का मार्गदर्शन कर रही हैं जैसे :

- गुणस्थान स्वरूप एवं विश्लेषण
- बहता पानी निर्मल
- द्रव्य संग्रह की टीका
- श्रमणाचार्य आदिसागर अंकलीकर परम्परा
- इंद्रप्रस्थ से मुक्तिधाम
- गुरु गरिमा
- मन की गुप्ति
- चौबीस ठाणा व्याख्यायिका
- सुन्दर गगरिया
- उदगांव का उदयाचल
- सन्मति संदेश
- भाव त्रिभंगी टीका

प्राप्त उपाधियां

आचार्य श्री को समाज व संतों द्वारा कई उपाधियां प्रदान की गई हैं जैसे : बालयोगी, अध्यात्मयोगी, युवाचार्य, वैय्यावृत्याचार्य, सरस्वती शिरोमणि, वात्सल्यपुंज, प्रशांत योगी, दिव्य तपस्वी, तपोमार्तण्ड, भक्तवत्सल, चेतना नायक, जीवन शिल्पी, श्रुत वारिधी, वात्सलय मूर्ति, श्रमण सूर्य, वात्सलय सिंधु, धर्म मित्र, वात्सलय सम्राट, धर्माचार्य।

क्षुल्लिका दीक्षा के बाद लक्ष्मी दीदी, रश्मि दीदी एवं विश्वलता दीदी इन 11 प्रतिमाओं का पालन करेंगी

•महाव्रत

1. अहिंसा महाव्रत
छरू काय के जीवों को मन, वचन, काय और कृत, कारित, अनुमोदना से पीड़ा नहीं पहुंचाना, सभी जीवों पर दया करना, अहिंसा महाव्रत है।

2. सत्य महाव्रत
क्रोध, लोभ, भय, हास्य के कारण असत्य वचन तथा दूसरों को संताप देने वाले सत्य वचन का भी त्याग करना, सत्य महाव्रत है।

3. अचौर्य महाव्रत
वस्तु के स्वामी की आज्ञा बिना वस्तु को ग्रहण नहीं करना, अचौर्य महाव्रत है।

4. ब्रह्मचर्य महाव्रत
जो मन, वचन, काय एवं कृत, कारित, अनुमोदना से वृद्धा, बाला, यौवन वाली स्त्री को देखकर अथवा उनकी फोटो को देखकर उनको माता, पुत्री, बहिन समझ स्त्री सम्बन्धी अनुराग को छोड़ता है, वह तीनों लोकों में पूज्य ब्रह्मचर्य महाव्रत है।

5. परिग्रह त्याग महाव्रत
अंतरंग चैदह एवं बाहरी दस प्रकार के परिग्रहों का त्याग करना तथा संयम, ज्ञान और शौच के उपकरणों में भी ममत्व नहीं रखना, परिग्रह त्याग महाव्रत है।

1. दर्शन प्रतिमा :
जो संसार शरीर भोगों से विरक्त, शुद्ध सम्यग्दर्शन का धारी, पंचपरमेष्ठी के चरण कमलों की शरण ग्रहण करने वाला और सच्चे मार्ग पर चलने वाला है, वह दर्शन प्रतिमाधारी कहलाता है। वह श्रावक पंच उदुम्बर और सप्तव्यसनों का तथा रात्रि में चारों प्रकार के आहार का त्यागी होता है।

2. व्रत प्रतिमा :
जो शल्यरहित होकर निरतिचार पाँच अणुव्रत, तीन गुणव्रत और चार शिक्षा व्रतों का पालन करता है, वह व्रत प्रतिमाधारी कहलाता है। इस प्रतिमा में सामायिक व्रत में दो समय सामायिक और विधिवत देव पूजन करना आवश्यक है।

3. सामायिक प्रतिमा :
प्रतिदिन प्रातः, मध्यान्ह और सायंकाल इन तीनों कालों में कम से कम दो घड़ी तक विधिपूर्वक अतिचाररहित सामायिक करना सामायिक प्रतिमा कहलाती है।

4. प्रोषधोपवास प्रतिमा :
प्रत्येक महीने की दोनों अष्टमी और दोनों चतुर्दशी, ऐसे चारों पर्वों में अपनी शक्ति को न छिपाकर धर्मध्यान में लीन होते हुए प्रोषध को अथवा उपवास को अवश्य करना प्रोषध प्रतिमा का लक्षण है। प्रोषध का अर्थ एक बार भोजन करना होता है। उत्कृष्ट प्रोषध प्रतिमा में सप्तमी और नवमी को एक बार शुद्ध भोजन और अष्टमी को उपवास होता है। जघन्य में अष्टमी को एक बार भोजन होता है। मध्यम में कई भेद हो जाते हैं।

5. सचित्त त्याग प्रतिमा :
कच्चे फल-फूल, बीज, पत्ते आदि नहीं खाना, इन्हें छिन्न-भिन्न करके, लवण आदि मिलाकर या गरम आदि करके प्रासुक बनाकर खाना, पानी भी प्रासुक करके पीना सचित्त त्याग प्रतिमा कहलाती है।

6. रात्रि भोजन त्याग प्रतिमा :
जो दयालु श्रावक रात्रि में अन्न, खाद्य, लेह्य, पेय इन चारों आहारों का त्याग कर देता है, वह रात्रि भुक्ति त्यागी छठी प्रतिमाधारी श्रावक होता है।

7. ब्रह्मचर्य प्रतिमा :
मल का बीज, मल का स्थान, दुर्गंधियुक्त ऐसे शरीर का स्वरूप समझकर काम सेवन में पूर्णतया विरक्त होकर स्त्रीमात्र का त्याग कर देना अर्थात् पूर्ण ब्रह्मचर्य ग्रहण कर लेना ब्रह्मचर्य प्रतिमा है।

8. आरंभ त्याग प्रतिमा :
हिंसा के कारण नौकरी, खेती, व्यापार आदि गृहकार्य संबंधी सब तरह की क्रियाओं का त्याग करने वाला श्रावक आरंभ त्यागी प्रतिमाधारी कहलाता है। इस प्रतिमा में दान, पूजन आदि धर्म कार्य संबंधी आरंभ कार्य कर सकते हैं। घर में रहकर भी धर्म साधन कर सकते हैं, घर छोड़कर भी कर सकते हैं।

9. परिग्रह त्याग प्रतिमा :
दस प्रकार के बाह्य परिग्रह को पाप का कारण समझकर त्याग कर देना परिग्रह त्याग प्रतिमा कहलाती है। इस प्रतिमा का धारी अपने लिए कुछ आवश्यक वस्त्र या बर्तन रख लेता है। घर का त्याग कर संघ में या धर्मशाला आदि में रहता है। श्रावक के द्वारा निमंत्रण आने पर शुद्ध भोजन करता है।

10. अनुमति त्याग प्रतिमा :
जो खेती, व्यापार, विवाह आदि गृहकार्य संबंधी किसी भी कार्य में अनुमोदना या सम्मति नहीं देता है, वह अनुमति त्यागी कहलाता है। इस प्रतिमा का धारी भी संघ में या जिनमंदिर आदि में रहता है। श्रावक द्वारा बुलाने पर शुद्ध भोजन करके आता है और धर्म-ध्यान में तत्पर रहता है।

11. उद्दिष्ट त्याग प्रतिमा :
जो अपने घर को छोड़कर मुनियों के संघ में जाकर गुरु के पास दीक्षा लेकर तपश्चरण करता है और भिक्षावृत्ति से आहार ग्रहण करता है, निमंत्रण से भोजन नहीं करता है, खंड वस्त्र धारण करता है, वह उद्दिष्ट त्यागी प्रतिमाधारी कहलाता है।

इस ग्यारहवीं प्रतिमाधारी के दो भेद हैं –

क्षुल्लक और ऐलक। क्षुल्लक एक लंगोटी और खंड वस्त्र (चादर) रखते हैं। सिर और दाढ़ी मूँछ की हजामत कैंची से या उस्तरा से करा लेते हैं अथवा केशलोंच भी कर लेते हैं। पिच्छी आदि उपकरण से स्थान आदि का प्रतिलेखन करते हैं, एक बार बैठकर पाणिपात्र या थाली में भोजन करते हैं। भिक्षावृत्ति से भोजन करते हैं अथवा गुरुओं के आहारार्थ निकल जाने पर उनके पीछे-पीछे आहार के लिए चले जाते हैं।

आयोजक : श्री 1008 आदिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर, मोहन कॉलोनी, रातीतलाई, बांसवाड़ा (राज.)
संरक्षक - अशोक वोरा, अध्यक्ष - पवन नश्नावत, उपाध्यक्ष- पवन वोरा, महामंत्री- मनोज जैन, कोषाध्यक्ष - कांतिलाल रणियावत, सहमंत्री - रमेशचंद्र राजावत

मुख्यमंत्री ने प्रेषित की शुभकामनाएं, कहा -

ऐसे समारोह करते हैं आध्यात्मिक आस्था और सामाजिक समरसता का संचार

राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने बांसवाड़ा में आचार्य सुंदर सागरजी महाराज सहित 65 संतों के सान्निध्य में आयोजित भव्य जैनेश्वरी दीक्षा समारोह के लिए अपनी शुभकामनाएं प्रेषित की हैं। मुख्यमंत्री ने अपने शुभकामना संदेश में कहा है कि जैन अध्यात्म दर्शन में युवा पीढ़ी द्वारा दीक्षा ग्रहण करने की सुदीर्घ परम्परा रही है। इससे दीक्षार्थी मोह-माया को त्याग कर मुनि और साध्वी परम्परा का का निर्वहन करते हुए त्याग, तप, संयम और अपरिग्रह के साथ ही अध्यात्म मार्ग की ओर अग्रसर होते हैं।

उन्होंने आशा व्यक्त की है कि जैनेश्वरी दीक्षा समारोह के अनुष्ठान श्रद्धालुओं में आध्यात्मिक आस्था के साथ ही सामाजिक समरसता का संचार करने वाले होंगे। मुख्यमंत्री ने अपने संदेश में आचार्य संघ को नमन करते हुए दीक्षार्थियों और उनके परिवारजन को साधुवाद दिया है एवं समारोह की सफलता की मंगल कामना की है।

दीक्षा महोत्सव के सात दिवसीय कार्यक्रम

• शनिवार 4 दिसम्बर 2021, शनिवार

• जिनेन्द्र भगवान का अभिषेक, शांतिधारा • भक्तामर विधान • प्रवचन • आरती और गुरु भक्ति • पुण्यार्जक परिवार : सुभद्रादेवी महेन्द्र कुमार जैन वोरा परिवार

• रविवार, 5 दिसम्बर 2021

• अभिषेक, शांतिधारा, पूजन • कल्याण मन्दिर विधान, प्रवचन • गुरुभक्ति, आरती • आचार्य संघ के द्वारा दीक्षार्थियों के वैराग्य की अनुमोदना • पुण्यार्जक : रमीलादेवी अजबलाल वोरा परिवार

• सोमवार, 6 दिसम्बर 2021

• अभिषेक, शांतिधारा, पूजन • आचार्य विमल सागर विधान • आचार्य सन्मति सागर महाराज विधान • गुरुभक्ति, आरती • पुण्यार्जक : उर्मिलादेवी पवनकुमार वोरा परिवार

• मंगलवार, 7 दिसम्बर 2021

• अभिषेक, शांतिधारा, पूजन • श्री शांतिविधान, पूजन • हल्दी व होली कार्यक्रम • आरती व गुरु भक्ति • महिला संगीत व मेहंदी

• बुधवार, 8 दिसम्बर 2021

• अभिषेक, शांतिधारा, पूजन • गुरुपूजन, पादप्रक्षालन, प्रवचन • माता : पिता के घर मंगल स्नान • आरती • दीक्षार्थियों की भव्य शोभायात्रा (बिनौली)

• गुरुवार, 9 दिसम्बर 2021

• अभिषेक, शांतिधारा, पूजन • गणधर वलय विधान, प्रवचन • दीक्षार्थियों की आहार चर्या • सामूहिक गोद भराई, रक्षा बंधन • संघ समुदाय का अभिनंदन • गुरुभक्ति, आरती • विक्की डी. पारीक भजन संध्या

• शुक्रवार, 10 दिसम्बर 2021

• अभिषेक, शांतिधारा, पूजन • दीक्षा विधि कार्यक्रम

आज से हुआ है ...

(पृष्ठ 1 का शेष)

जब आप ब्रह्मचारी अवस्था में थीं तो आप संघ की व्यवस्थाएं संभालते हुए जल्दी जल्दी काम करवा लेती होंगी या स्वयं कर लेती होंगी पर ध्यान रखना अब ऐसा नहीं होगा। अब परिस्थितियां बदल गई है। अब व्यवस्थाएं बनाने में समय लगेगा काम देरी से भी होगा ,पूर्ण रूप से मन पसन्द भी नहीं होगा लेकिन ऐसी स्थिति में धैर्य बनाए रखना। अपने आप को सहज बनाए रखना। समाज और जुड़े लोग अब आपका काम नही आपका आचरण देखेंगे। गुरु के प्रति आप की श्रद्धा अटूट है जिनका शब्दों में वर्णन नही कर सकते पर अब वह श्रद्धा दिखनी भी चाहिए गुरु मुख से निकले प्रत्येक शब्द को आदेश मानकर ग्रहण करना। आप अब अपनी नजर से नहीं गुरु की नजर से सब को देखना तभी संघ का माहौल स्वस्थ बनेगा और पूरे संघ का विचार एक जैसा होगा। इसी वातावरण से संघ में अन्य त्यागी आप के लिए आदेशपूर्ण है पर वह अब आचरण में दिखना चाहिए क्यों कि अब आप का व्यवहार गुरु के प्रति कैसा होगा वह भी महत्त्व रखेगा आप के इस मोक्षा मार्ग में। यह सब बातें मैं वही बता रहा हूं जो होती ही है। यह सब मेरे जीवन में भी हुई है।

पांच समिति

'सम्' अर्थात् सम्यक् 'इति' अर्थात् गति या प्रवृत्ति को समिति कहते हैं। चलने-फिरने में, बोलने-चलने में, आहार ग्रहण करने में, वस्तुओं को उठाने-रखने में और मल-मूत्र का निक्षेपण करने में यत्न पूर्वक सम्यक् प्रकार से प्रवृत्ति करते हुए जीवों की रक्षा करना, समिति है। यह पांच हैं ।

1. **ईर्यर** : प्रासुक मार्ग से दिन में चार हाथ (छरू फुट) प्रमाण भूमि देखकर चलना, यह ईर्यर समिति है। भूमि देखकर चलने का अर्थ भूमि पर चलने वाले जीवों को बचाकर चलना।
2. **भाषा** : चुगली, निंदा, आत्म प्रशंसा आदि का परित्याग करके हित, मित और प्रिय वचन बोलना, भाषा समिति है। जैसे-कपड़ा मीटर से नापते हैं और धान्य आदि बाँट से तौलते हैं, वैसे ही नाप-तौल कर बोलना चाहिए अर्थात् हमारे वाक्य ज्यादा लम्बे न हों फिर भी अर्थ ठोस निकले।
3. **एषणा समिति** : 46 दोष एवं 32 अंतराय टालकर सदाचारी उच्चकुलीन श्रावक के यहाँ विधि पूर्वक निर्दोष आहार ग्रहण करना, एषणा समिति है।
4. **आदान निक्षेपण समिति** : शास्त्र, कमण्डलु, पिच्छी आदि उपकरणों को देखकर-शोधकर रखना और उठाना, आदान निक्षेपण समिति है।
5. **उत्सर्ग समिति** : जीव रहित स्थान में मल-मूत्र आदि का त्याग करना, उत्सर्ग समिति है।

पंचेन्द्रिय निरोध

स्पर्शन, रसना, घ्राण, चक्षु और श्रोत्र इन पांच इन्द्रियों के मनोज्ञ-अमनोज्ञ विषयों में राग-द्वेष का परित्याग करना पंचेन्द्रिय निरोध है।

1. **स्पर्शन इन्द्रिय निरोध** : शीत-उष्ण, कोमल-कठोर, हल्का-भारी और स्निग्ध-रूक्ष इन स्पर्शन इन्द्रिय के विषयों में राग-द्वेष नहीं करना, स्पर्शनेन्द्रिय निरोध है।
2. **रसना इन्द्रिय निरोध** : खट्टा, मीठा, कड़वा, कषायला और चरपरा इन रसना इन्द्रिय के विषयों में राग-द्वेष नहीं करना, रसना इन्द्रिय निरोध है।
3. **घ्राण इन्द्रिय निरोध** : सुगंध और दुर्गंध इन घ्राण इन्द्रिय के विषयों में राग-द्वेष नहीं करना, घ्राण इन्द्रिय निरोध है।
4. **चक्षु इन्द्रिय निरोध** : काला, पीला, नीला, लाल और सफेद इन चक्षु इन्द्रिय के विषयों में राग - द्वेष नहीं करना, चक्षु इन्द्रिय निरोध है।
5. **श्रोत्र इन्द्रिय निरोध** : मधुर स्वर, गान, वीणा आदि को सुनकर राग नहीं करना एवं कठोर निंद्य, गाली आदि के शब्द सुनकर द्वेष नहीं करना, श्रोत्र इन्द्रिय निरोध है।

आवश्यक

अवश्य करने योग्य क्रियाएं आवश्यक कहलाती हैं। साधु को अपने उपयोग की रक्षा के लिए नित्य ही छरू क्रियाएँ करनी आवश्यक होती हैं, उन्हें ही छरू (षट्) आवश्यक कहते हैं। जो कषाय, राग-द्वेष आदि के वशीभूत न हो वह अवश है। उस अवश का जो आचरण होता है, वह आवश्यक है, आवश्यक छरू होते हैं।

1. **समता या सामायिक** : राग-द्वेष आदि समस्त विकार भावों का तथा हिंसा आरम्भ आदि समस्त बहिरंग पाप कर्मों का त्याग करके जीवन-मरण, हानि-लाभ, सुख-दुःख आदि में साम्यभाव रखना समता या सामायिक है।
2. **स्तुति** : 24 तीर्थंकरो के गुणों का स्तवन करना स्तुति है।
3. **वन्दना** : चैबीस तीर्थंकरो में से किसी एक की एवं पंच परमेष्ठियों में से किसी एक की मुख्य रूप से स्तुति करना वंदना है। यह दिन में तीन बार करते हैं।
4. **प्रतिक्रमण** : व्रतों में लगे दोषों की आलोचना करना प्रतिक्रमण है। अथवा 'मेरा दोष मिथ्या हो' ऐसा कहना प्रतिक्रमण है। 'तस्स मिच्छा मे दुक्कड'। प्रतिक्रमण भी दिन में तीन बार करते हैं। प्रतिक्रमण सात प्रकार के होते हैं। दैवसिक, रात्रिक, ईर्यापथिक, पाक्षिक, चातुर्मासिक, संवत्सरिक (वार्षिक), औतमार्थिक प्रतिक्रमण जो संल्लेखना के समय होता है।
5. **प्रत्याख्यान** : आगामी काल में दोष न करने की प्रतिज्ञा करना प्रत्याख्यान है। अथवा सीमित काल के लिए आहारादि का त्याग करना प्रत्याख्यान है।
6. **कायोत्सर्ग** : परिमित काल के लिए शरीर से ममत्व का त्याग करना कायोत्सर्ग है। कायोत्सर्ग का अर्थ होता है। शिथिलीकरण अर्थात रिलेक्सेशन। इससे शरीर की शक्ति शिथिल हो जाएगी एवं आत्मा की शक्ति सक्रिय हो जाएगी।

शेष सात गुण

1. अस्नान व्रत - स्नान करने का त्याग, साधु का शरीर धूल, पसीने से लिप्त रहता है, उसमें अनेक सूक्ष्म जीव रहते हैं, उनका घात न हो इसलिए स्नान नहीं करते हैं।
2. भूमि शयन - थकान दूर करने के लिए शयन आवश्यक है। रात्रि में एक करवट से थोड़ा शयन करने के लिए भूमि, शिला, लकड़ी के पाटे, तृण अर्थात् सूखी घास या चटाई का उपयोग करते हैं। और किसी का नहीं।
3. अचेलकत्व - वस्त्र, चर्म और पत्ते आदि से शरीर को नहीं ढकना अर्थात् नग्न रहना। दिशाएं ही जिनके अम्बर अर्थात् वस्त्र हैं, वे दिगम्बर हैं।
4. केशलोंच - दो माह से चार माह के बीच में प्रतिक्रमण सहित दिन में उपवास के साथ अपने हाथों से सिर, दाढ़ी एवं मूंछों के केशों को उखाड़ना केशलोंच है। दो माह में करना उत्कृष्ट है, चार माह में करना जघन्य है एवं दोनों के बीच में करना मध्यम है।
5. एक भुक्ति - चैबीस घंटों में मात्र एक बार आहार करना। सूर्योदय के 3 घड़ी के बाद (72 मिनट) एवं सूर्यास्त से 3 घड़ी पहले। सामायिक का काल छोड़कर शेष काल में 3 मुहूर्त (2 घंटे 24 मिनट) तक आहार ले सकते हैं। (मू.प्र., 500-502)
6. अदंतधावन - अङुली, नख, दातुन, छाल, मंजन, बुरश, पेस्ट आदि से दांतों के मल का शोधन नहीं करना, इन्द्रिय संयम की रक्षा करने वाला अदंतधावन मूलगुण है।
7. स्थिति भोजन - दीवार आदि का सहारा लिए बिना खड़े होकर आहार करना। खड़े होते समय दोनों पैर के बीच 4 अर्जुल का अंतर या पीछे 4 अर्जुल एवं आगे 4 से 12 अर्जुल तक का अंतर रह सकता है। (आ.पु., 18/3)

अब आत्म कल्याण की ओर ...

दीक्षार्थी दीदियों का परिचय

संसार पथ से संयम पथ पर यूं बढ़े कदम

सामाान्य जीवन जीते हुए दीक्षा लेकर संयम के पथ पर चलना आसान नहीं होता। ऐसे में यह जानना भी जरूरी है कि जो दीक्षार्थी हैं उनका अब तक का जीवन कैसा था, तो आइए जानते हैं इसके बारे में-

• बा.ब्र. रीता जैन दीदी

- **पिता :** श्री सुमन कुमार जैन (मुनि सुमर सागर महाराज)
- **माता :** श्रीमती आदर्श जैन (क्षुल्लिका सुदर्शन मति माता जी)
- **जन्मतिथि :** 13 अप्रैल 1975
- **जन्म स्थान :** निधौली कला एय (उत्तर प्रदेश)
- **भाई :** अमित, शेखर, बा.ब्र. विकास
- **शिक्षा :** एम.ए. हिंदी, संस्कृत, बी.एड.,पी.एच.डी., नेट परीक्षा उत्तीर्ण
- **ब्रह्मचर्य :** आचार्य विमल सागर महाराज जी से सम्मेदशिखर जी में ब्रह्मचर्य दीक्षा
- **सप्तम प्रतिमा :** आचार्य सन्मति सागर महाराज जी से जयपुर में

धर्म का परिवार

धर्म के माता-पिता
- श्री आशीषकुमार जैन एवं श्रीमती उपासना जैन, बांसवाड़ा

धर्म के भाई-भाभी
- श्री प्रदीपकुमारजी, श्रीमती सरला दीदी तिजारावाले, कानपुर
- श्री संजय वोरा, श्रीमती आशा जैन, लोहारिया
- श्री डॉ. शैलेन्द्र जैन, श्रीमती डॉ. रूपा जैन, एटा
- श्री संजीवकुमार जैन, श्रीमती समता जैन, एटा
- श्री संजयकुमार जैन, श्रीमती रानी जैन, एटा
- श्री गौरवकुमार जैन, श्रीमती वर्षा जैन एटा
- श्री पीयूष जैन, श्रीमती शर्मिला जैन,
- श्री नितिन जैन, श्रीमती देवस्मिता जैन

धर्म के भाई-बहन
- युगम नश्नावत, धैर्या नश्नावत

बा.ब्र. पूजा दीदी

- **पिता :** केतन शाह
- **माता :** श्रीमति रागिनी शाह
- **जन्म स्थान :** नरोडा, अहमदाबाद (गुजरात)
- **जन्मतिथि :** 8 अक्टूम्बर 1991
- **निवास स्थान :** बोरीवली (मुम्बई)
- **शिक्षा :** इलेक्ट्रोनिक्स में इंजीनियरिंग, मुम्बई
- **बहन :** हिनल शाह
- **ब्रह्मचर्य व्रत :** 3 जनवरी 2008
- **गृहत्याग :** 19 अगस्त 2017
- **गुरु :** आचार्य सुंदर सागर महाराज जी
- **सप्तम प्रतिमा :** 10 सितम्बर 2017

धर्म का परिवार

धर्म के माता-पिता
- श्री ऋषभकुमार जैन, श्रीमती अनिता जैन, लोहारिया

धर्म के भाई-भाभी
- श्री मोहितकुमार जैन, श्रीमती शीतल जैन, बड़ोदिया,
- श्री सनतकुमारजैन, श्रीमती रीना जैन, बांसवाड़ा
- श्री मयंक, श्रीमती श्वेता वोरा, बांसवाड़ा
- श्री पारसकुमार जैन, श्रीमती प्रियंका जैन, बांसवाड़ा
- श्री श्रीपाल जैन, श्रीमती आशादेवी, प्रवेश, चारू जैन, लोहारिया
- श्री वीरेन्द्रकुमार जैन, श्रीमती चेतना जैन, लोहारिया,
- श्री रजत, अमन जैन (बाराबंकी),
- निखिल जैन, अखिल जैन, अमन जैन लोहारिया
- डॉ. हेमन्त जैन एवं नेहा जैन, बड़ोदिया

बा.ब्र. सुरभि दीदी

- **पिता :** प्रदीप कुमार जैन
- **माता :** श्रीमति बबिता जैन
- **जन्म स्थान :** इटावा (उत्तर प्रदेश)
- **जन्मतिथि :** 28 जनवरी 1999
- **शिक्षा :** बी.एससी.
- **बहन :** आकांक्षा जैन,कनक दीदी (संघ में), मनोज्ञा जैन
- **भाई :** सूर्यप्रकाश
- **ब्रह्मचर्य व्रत :** 16 वर्ष की आयु में 2015 (इटावा नगर)
- **गृह त्याग :** 17 वर्ष की आयु में बाराबंकी
- **गुरु :** आचार्य श्री सुंदर सागर महाराज
- **सप्तम प्रतिमा :** 14 मई 2021,लोहारिया

धर्म का परिवार

धर्म के माता-पिता
- श्री सुनीलकुमार जैन, श्रीमती हिना जैन, बांसवाड़ा

धर्म के भाई-भाभी
- श्री सिद्धार्थ जैन एवं सुश्री मानसी जैन, बांसवाड़ा
- श्री रितिक नश्नावत
- श्री धर्मेन्द्रकुमार जैन, श्रीमती किरण जैन, बांसवाड़ा
- श्री विपिन वोरा, श्रीमती मेघा वोरा, बांसवाड़ा
- श्री प्रतीककुमार जैन, श्रीमती प्रांजलि जैन, बांसवाड़ा
- श्री संजीवकुमार जैन, श्रीमती मनीषा जैन, लखनऊ
- श्री जयेश जैन, श्रीमती निधि जैन, लोहारिया,
- दक्ष जैन, हर्ष जैन (काजू) लोहारिया

धर्म की बहन
- आयुषी नायक पुत्री जयंतीलालजी नायक, बांसवाड़ा

ब्र. लक्ष्मी दीदी

- **नाम :** लक्ष्मी जैन
- **पति :** स्व. श्री निर्मल चन्द्र जैन
- **पिता :** श्री अमोलक चन्द्र जैन (मुनि आदिसागर महाराज)
- **माता :** श्रीमति सोना देवी जैन
- **जन्मस्थान :** भिण्ड
- **निवास स्थान :** शेखी सराय : इटावा
- **शिक्षा :** गर्ल्स स्कूल 11 वीं कक्षा (इटावा)
- **ब्रह्मचर्य व्रत :** 2015 ,शिकोहाबाद
- **गुरु :** आचार्य सुंदर सागर महाराज
- **दो प्रतिमा :** 9 मई 2016 ,कानपुर
- **सप्तम प्रतिमा :** 16 जुलाई,2017 बड़ौत

धर्म का परिवार

धर्म के माता-पिता
- श्री पवनकुमार नश्नावत, श्रीमती मधुबाला नश्नावत, बांसवाड़ा (लोहारियावाले)

धर्म के भाई-भाभी
- श्री अशोक जैन, श्रीमती नारंगी जैन, लोहारिया
- श्रीमान राहुल, श्रीमती आरती, श्रीमान संदीप, श्रीमती शर्मिला, श्रीमान श्रीमंत, श्रीमती विभुति नश्नावत, बांसवाड़ा
- श्री अभयकुमार जैन, श्रीमती निशा जैन, लोहारिया
- श्री हेमंतकुमार जैन सी.ए., श्रीमती रश्मि जैन, बांसवाड़ा
- श्री महेन्द्रकुमार जैन, श्रीमती सुभद्रा जैन, लोहारिया
- श्री कांतिलालजी जैन, श्रीमती विमलादेवी, लोहारिया
- श्री रमेशकुमार जैन, श्रीमती शीलादेवी, लोहारिया

ब्र. रश्मि दीदी

- **नाम :** रश्मि जैन
- **पति :** स्व. अनिल कुमार जैन
- **पिता :** स्व. बाबूलाल जैन
- **माता :** श्रीमती प्रेमवती जैन
- **भाई :** बहन : 2 भाई, 4 बहन
- **बेटी :** बा.ब्र. प्रिया दीदी
- **जन्मस्थान :** जारकी जिला फिरोजाबाद (उ.प्र.)
- **जाति :** पद्मवाती पुरवाल
- **शिक्षा :** पांचवी
- **दो प्रतिमा :** 15 अगस्त 2019,उदयपुर
- **गुरु :** आचार्य सुंदर सागर महाराज

धर्म का परिवार

धर्म के माता-पिता
- श्री मनोज जैन, श्रीमती अर्चना जैन, बांसवाड़ा (रामगढ़वाले)

धर्म के भाई-बहन
- इलिका जैन, सार्वी जैन, चरित्र जैन, मित्तल जैन, हेमांग जैन

धर्म के भाई-भाभी
- श्री महावीर नश्नावत, श्रीमती अल्का नश्नावत, बांसवाड़ा
- श्री महावीर जैन, श्रीमती सुनीता जैन, लोहारिया
- श्री पुष्पेन्द्र जैन, श्रीमती प्रिया जैन, लोहारिया
- श्री नीरजकुमार जैन, श्रीमती अमिता जैन, लोहारिया
- श्री हेमन्तकुमार जैन, श्रीमती सुषमा जैन, लोहारिया
- श्री पारस जैन, श्रीमती पद्मा जैन (रामगढ़)
- श्री पंकज जैन, श्रीमती चेतना जैन (रामगढ़)

ब्र. विश्वलता दीदी

- **पिता :** लखमीचंद्र जैन
- **माता :** शांतिदेवी जैन
- **निवास :** एटा (उ.प्र.)
- **व्रत :** सप्तम प्रतिमा
- **गुरु :** आचार्य श्री सुंदर सागर महाराज

पिच्छिका देते समय उच्चारण

ॐ णमो अरहंताणं भो अन्तेवासिन् !
षड्जीवनिकायरक्षणाय मार्दवादिगुणोपेतमिदं
पिच्छिकोपकरणं गृहाण गृहाणेति ।

शास्त्रदान देते उच्चारण

ॐ णमो अरहंताणं, मतिश्रुतवधिमनःपर्यय
केवलज्ञानाय द्वादशांगश्रुताय नमः।
भो अन्तेवासिन् ! इदं ज्ञानोपकरणं गृहाण गृहाणेति ।

शौचोपकरण कमण्डल देते उच्चारण

कमंडलुं वामहस्तेन उद्धृत्य ॐ णमो अरहंताणं
रत्नत्रयपवित्रीकरणांगाय बाह्याभ्यन्तर मलशुद्धाय नमः
भो अन्तेवासिन् इदं शौचोपकरणं ! गृहाण गृहाणेति ।

दीक्षा महोत्सव में बहती रही ज्ञान धारा

दीक्षा महोत्सव सिर्फ धार्मिक कार्यकम ही नहीं होता, बल्कि यह सामान्य श्रावक के लिए धार्मिक ज्ञान और अध्यात्म के रस में डूबने का माध्यम भी होता है। आचार्य श्री सुंदर सागर जी महाराज के आशीर्वचनों से पूरे महोत्सव के दौरान की ज्ञान और अध्यात्म की धारा बहती रही। दीक्षा प्रदाता आचार्य श्री सुन्दर सागर महाराज द्वारा सात दिवसीय दीक्षा महोत्सव में दिए प्रवचन के कुछ अंश आप सब के लिए ...

दीक्षा आत्म कल्याण का साधन है

• **4 दिसम्बर** : दीक्षा आत्म कल्याण का साधन है। दीक्षा मनुष्य को सभ्य बना देती है। दीक्षा बंधन से छूटने का मार्ग है। दीक्षा मनुष्य को संस्कारों से जोड़ देती है। दीक्षा के बाद 5 बहनें अपने आप को पहचानने की साधना करेंगी। गुरु का आशीर्वाद और शिष्य की श्रद्धा इन दोनो पवित्र धाराओं के संगम का नाम ही दीक्षा है अर्थात गुरु के आत्मदान और शिष्य के आत्मसमर्पण के मेल से ही दीक्षा संपन्न होती है। गुरु के द्वार मन्त्रों से दीक्षा संस्कार किया जाता है उसी से शिष्य के अंदर आत्मशक्ति प्रकट होती और उसी से वह अपने कर्मो से लड़ कर परमात्म बन जाता है। दीक्षा मनुष्य का दूसरा जन्म है। पहला जन्म माँ की कोख से हुआ और दूसरा जन्म दीक्षा संस्कार से होगा। पहले जन्म में उन्होंने जिनेन्द्र भगवान की आराधना कर पुण्य का संचय किया उसी पुण्य के संचय से 5 बहनें दीक्षा के योग्य बन पाई है अब वे शुभ अशुभ दोनो कर्मो की निर्जरा करने की साधना करेंगीं।

वैराग्य की भावना ना जाने कितने जन्मों के पुण्य का फल है

• **5 दिसम्बर** : पांचों दीदियों में वैराग्य की भावना का जन्म हुआ है, यह इनकी न जाने कितने जन्मों के पुण्य का फल है। शास्त्रों में कहा है कि किसी भी कार्य की सफलता उपादान, निमित्त, पुरुषार्थ, भाग्य और काल लब्धि के कारण होती है। दीदियों की दीक्षा में इन सभी ने काम किया है। पांचों का अपना महत्व है। दीदियों के उपादान ने काम किया। उन्होंने पुरुषार्थ किया और हम निमित्त बन गए। इसी प्रकार भाग्य और काल लब्धि ने भी काम किया। 10 दिसम्बर को इनकी दीक्षा हो जाएगी। आज कल्याणमन्दिर विधान के माध्यम से दीक्षार्थी रीता दीदी, पूजा दीदी, सुरभि दीदी, लक्ष्मी दीदी और रश्मि दीदी ने भगवान की आराधना करते हुए वैराग्य के भावों को और मजबूत किया हैं। जिनेन्द्र भगवान के बताए मार्ग पर चल कर अपने आप को परमात्मा बनाएंगी।

मोक्ष की अभिलाषा रखने वाला ही इसे पा सकता है

• **6 दिसम्बर** : दीक्षा आत्मकल्याण के लिए ली जाती है। दीक्षा वही ले पाते हैं जो बड़भागी होते हैं। विषय कषायों से रहित होकर जो आत्म हित के लिए साधना के मार्ग पर उतारता है वही मुमुक्षु कहलाता है अर्थता मोक्ष की अभिलाषा जिसके मन में होती है वही मोक्ष प्राप्त कर सकता है।तपस्वी सम्राट आचार्य सन्मति सागर जी महाराज सम्पूर्ण जैन दिगम्बर जैन संत समुदाय में सर्वोत्कृष्ट तपस्वी थे। उन्होंने अपनी तप साधना के बल पर इस पंचम काल में भी मुमुक्षुओं के लिए सम्यक तप की आराधना का मार्ग प्रशस्त किया है। आचार्य विमल सागर जी महाराज निमित्तज्ञान के धनी और वात्सल्यरत्नाकर के नाम से विश्व मे विख्यात थे और सम्पूर्ण विश्व के कल्याण की भावना से दिन-रात तप साधना में लगे रहते थे। ऐसे महान आचार्य का विधान कर दीक्षार्थी दीदियां धन्य हो गई है। मोहन कॉलोनी बांसवाड़ा के लोगों का पुण्य है कि दीक्षा के समय वे यहां विराजमान होंगे। सम्यकदर्शन और वात्सलय अंग का इससे बडा उदाहरण नहीं हो सकत। दीक्षार्थी बहनें इस दृश्य को देखकर अपनी विशुद्धि की वृद्धिगत कर रही हैं।

जिनेन्द्र भगवन की आराधना से सब दुख दूर होते हैं

• **7 दिसम्बर** : दीक्षार्थी बहनों द्वारा श्री शांतिनाथ विधान किया जा रहा है। दीक्षार्थी बहनें इस विधान के माध्यम से जिनेन्द्र भगवान की आराधना करते हुए यह भावना कर रही हैं कि विश्व मे कोरोना महामारी पुनः ना आए और विश्व के प्राणी जो भय से धन से, तन से और किसी शारीरिक कष्ट से दुखी है तो इन सबका यह दुख दूर हो जाए और सन्मार्ग की प्राप्ति हो। साथ ही बहनें अपने भावों को विशुद्ध करने के लिए और कर्म निर्जरा के लिए तथा शांति की प्राप्ति के लिए श्री शांतिनाथ भगवान को महार्घ्य चढ़ाएं। जब-जब दुःख आता है प्राणी को भगवान की याद आती है। प्राणी जब अपने इष्ट जिनेन्द्र की आराधना करता है तो दुःख दूर होते है। उसी प्रकार जिनेन्द्र की आराधना करने से संसार के दुख भी दूर होते है और आत्मा पवित्र होती है।

बा.ब्र. रीता जैन के माता-पिता

बा.ब्र. पूजा के माता-पिता

बा.ब्र. सुरभि के माता-पिता

ब्र. रश्मि के सास-ससुर

जैन ग्रंथों में बताए गए मूलगुणों का पालन कर अपने जीवन को सफल बनाएं

• संदेश

आचार्य अनुभव सागर महाराज

संसारी प्राणी अनेकानेक दुःख और परेशानियों के बीच दुःख से बचना तो चाहता है, लेकिन वह दुःख के कारणों से अनभिज्ञ रहता है। जो

व्यक्ति संसार-शरीर और लोगों के स्वभाव को समझ लेता है, वह यथार्थ मार्ग की ओर अग्रसर हो आत्म कल्याण में लीन हो जाता है।

यह सौभाग्य और हर्ष का विषय है कि वागड़ प्रांत की धर्म नगरी बांसवाड़ा के श्रावकों को दिव्य तपस्वी आचार्य 108 श्री सुंदर सागर जी महाराज का आशीर्वाद मिल रहा है। विशाल संघ के नायक ऐसे तपस्वी सम्राट जो अल्पवय में ही 36 दीक्षाएं दे चुके हैं, उनके पावन सान्निध्य और आशीष से वागड़ की इस पुण्यशाली धरा पर मोहन कॉलोनी स्थित श्री आदिनाथ दिगंबर जैन मंदिर में 10 दिसंबर, 2021 को 5 ब्रह्मचारिणी बहनों की दीक्षा जिनशासन के श्रवण मार्ग का संवर्धन करने वाली हैं। बड़भागी हैं दीक्षा ग्रहण करने वाली ये सभी बहनें, जिन्हें आचार्यश्री अपने कर-कमलों से मुक्ति पथ की राह दिखा रहे हैं। साथ ही पुण्यशाली है, बांसवाड़ा का जैन समाज जो इस सुअवसर का साक्षी बना है और धर्म में अपनी आस्था एवं विश्वास को निरंतर दृढ़ कर रहा है।

सर्वगुण संपन्न, उच्च शिक्षित एवं अल्पवय में ही वैराग्य मार्ग पर अग्रसर इन बहनों का स्त्री पर्याय की सर्वोत्कृष्ट साधना की ओर बढ़ना सम्पूर्ण जगत के लिए प्रेरणादायी और प्रशंसनीय है। विषय कषायों में निरंतर दौड़ संसार का कारण है, इस दौड़ को रोक देना ही मुक्ति है, कल्याण है।

संसार और मुक्ति के मध्य का मार्ग, जहां मुमुक्षु विषय कषायों में अपनी गति धीमी करते हैं, उसी का नाम दीक्षा है। दीक्षा के इस मंगलमयी अवसर पर सभी श्रावकों को भी यही संदेश है कि वे जैन ग्रंथों में बताए गए मूलगुणों का पालन कर अपने जीवन को सफल बनाएं। धर्म के प्रति अपनी श्रद्धा और संकल्प को पहले से अधिक सशक्त बनाकर आत्म कल्याण की ओर बढ़ें।

मोक्ष मार्ग की महायात्रा के बने साक्षी